

६. निसर्ग वैभव

पूरक पठन

- सुमित्रानंदन पंत

संभाषणीय

किसी विषय पर स्वयं स्फूर्त भाषण दीजिए :-

कृति के लिए आवश्यक सोपान :

- दस-पंद्रह भिन्न विषयों की चिट बनाइए • विद्यार्थियों को चिट पर लिखित विषय पर विचार करने के लिए कुछ समय दें। • उस विषय पर अपने विचार प्रस्तुत करने के लिए कहें।

परिचय

जन्म : २० मई १९०० कौसानी
(उ.खं.) मृत्यु : २८ दिसंबर १९७७
परिचय : पंत जी छायावादी युग के चार स्तंभों में से एक हैं। वे प्रकृति के साथ-साथ मानव सौंदर्य और आध्यात्मिक चेतना के भी कुशल कवि थे।

प्रमुख कृतियाँ : वीणा, गुंजन, पल्लव, ग्राम्या, चिदंबरा, कला और बूढ़ा चाँद आदि (काव्य संग्रह), हार (उपन्यास), साठ वर्षः एक रेखांकन (आत्मकथात्मक संस्मरण)

पद्य संबंधी

कविता : रस की अनुभूति कराने वाली, सुंदर अर्थ प्रकट करने वाली, हृदय की कोमल अनुभूतियों का साकार रूप कविता है।

प्रस्तुत रचना में प्राकृतिक वैभव, सौंदर्य, निसर्गरम्य अनुभूति-उदात्तता, आध्यात्मिकता, अदूभुत भाषा प्रभाव एवं वर्णन शैली का साक्षात्कार होता है।





अपलक तारापथ शशिमुख का
बनता लेखा दर्पण,
यहीं शैल कंधों पर सोया
जगता गंध समीरण !

सद्यः स्फुट सौंदर्य राशि
सम्मोहन भरती मन में,
कितना विस्मयकर वैचित्र्य
भरा पर्वत जीवन में !

खग चखते फल,
कुतर रहीं गिलहरियाँ कोंपल,
वन-पशु सब लगते प्रसन्न
परिचित मरकत आँगन में !

स्वाभाविक,
यदि मुझे याद आता
ईश्वर इस क्षण में !
जड़ जग इतना सुंदर जब
चेतन जग में क्या कारण
रहता अहरह जो
विषण्ण जीवन मन का संघर्षण ?

मनुज प्रकृति का करना फिर
नव विश्लेषण, संश्लेषण,-
ईश्वर का प्रतिनिधि नर,
अभिशापित हो उसका जीवन ?
लगता, अपनी क्षुद्र अहंता ही में
सीमित, केंद्रित,
छिन हो गया विश्व चेतना से
मानव मन निश्चित !

—○—

(‘पतझड़’ से)



निम्न शब्द पढ़िए। शब्द
पढ़ने के बाद जो भाव आपके
मन में आते हैं वे कक्षा में
सुनाइए।

नदी, पर्वत, वृक्ष, चाँद

शब्द संसार

- श्लक्षण (वि.) = मधुर
- अनिल (पुं.सं.) = पवन
- अहरह (क्रि.वि.) = प्रतिदिन
- मुकुल (स्त्री.सं.) = कली
- शैल (पुं.सं.) = पर्वत
- समीरण (पुं.सं.) = पवन
- मरकत (पुं.सं.) = पन्ना (एक रत्न)
- निर्जन (वि.) = वीरान
- अपलक (वि.) = बिना पलक झपकाए
- वैचित्र्य (भा.सं.) = अनोखापन



किसी कार्यालय में नौकरी पाने
हेतु साक्षात्कार देने वाले और
लेने वाले व्यक्तियों के बीच
होने वाला संवाद लिखिए।

पाठ के आँगन में

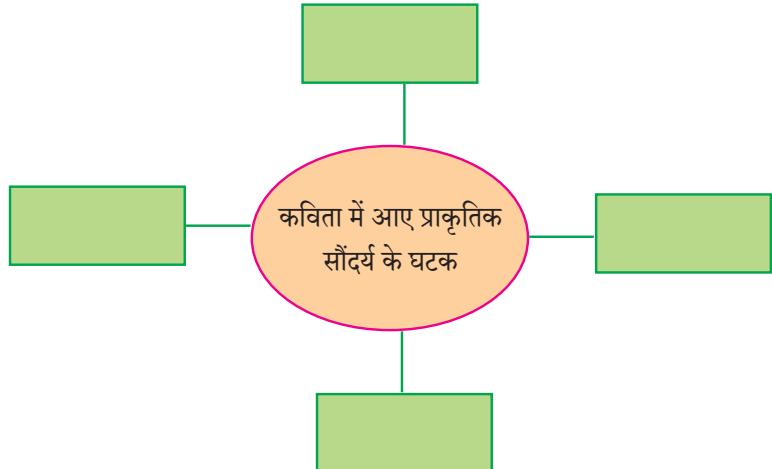
(१) सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :-

(क) संजाल :



(ख) कविता की पंक्तियों को उचित क्रमानुसार लिखकर प्रवाह तख्ता पूर्ण कीजिए :

- (१) परिचित मरकत आँगन में !
- (२) अभिशापित हो उसका जीवन ?
- (३) अनिल स्पर्श से पुलकित तृणदल,
- (४) निश्चल तरंग-सी स्तंभित !



प्रवाह तख्ता



नीरज जी द्वारा लिखित कोई कविता यू.ट्यूब पर सुनिए और उसके केंद्रीय भाव पर चर्चा कीजिए।

- (२) कविता द्वारा प्राप्त संदेश लिखिए।
- (३) कविता के तृतीय चरण का भावार्थ सरल हिंदी में लिखिए।

भाषा बिंदु

निम्नलिखित मुहावरे/कहावतों में से अनुपयुक्त शब्द काटकर उपयुक्त शब्द लिखिए :

मुहावरे - कहावते

१.

टोपी	पहनना
------	-------

 -

टोपी	पहनना
------	-------
२.

कमर	बंद	करना
-----	-----	------

 -

--	--	--
३.

गेहूँ	गीला	होना
-------	------	------

 -

--	--	--
४.

नाक	की	किरकिरी	होना
-----	----	---------	------

 -

--	--	--	--
५.

धरती	सर	पर	उठाना
------	----	----	-------

 -

--	--	--	--
६.

लाठी	पानी	का	बैर
------	------	----	-----

 -

--	--	--	--



8PB5C4

रचना बोध

.....
.....
.....
.....